॥ श्रीजिनेन्द्रायनमः ॥

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रंथमाला अंक १

(न्यामतविलास-१)

जिनेन्द्र भजन माला

(१)

मंगलाचरण (हरिगीता छंद ।)

जय वर्द्धमान जिनेन्द्र तवछवि वीतराग सुहावनी ।
मोहान्धकार विनाश दिनकर सार जग चूड़ामणी ॥
सब सुख करन पातक हरन शिवनारि पति त्रिभुवन धनी ।
सुरनर असुर मुनिराज गणधर यश भजैं प्रभु तुम तनी ॥१॥

(२)

(चाल) दोहा छंद ।

वीतराग सर्वज्ञ तुम जगत गुरू जगभान ।
हाथ जोड़ बन्दन करूँ वर्द्धमान भगवान ॥ १ ॥
तीन जगत की लाज तुम और तिलक त्रैलोक ।
विघन हरण मंगल करन लोकालोक विलोक ॥ २ ॥
तीर्थंकर अवतार ले पंच कल्याणक धार ।
कलिल कुलाचल तोड़ के परणी शिव बरनार ॥ ३ ॥
जग भूषण दूषण रहित तारण तरण महान ।
धर्म अर्थ शिव काम फल दाता सब जग जान ॥ ४ ॥

करता धर्म उपदेश के अरु शिव मग नेतार ।
विश्व तत्व ज्ञाता तुम्ही भेत्ता कर्म पहार ॥ ५ ॥
पतत जीव भव जल विषै तिनके तारन काज ।
द्वादशांग बाणी मयी रचदिया एक जहाज़ ॥ ६ ॥
गणधर आदि अनेक मुनि अशरण जगत मझार ।
तिस नय्या में बैठ कर हो गये भवदधि पार ॥ ७ ॥
आप निरंजन जगत में रंजन जगत अनाद ।
जन्म निकंजन जनन के भंजन व्याधि विषाद ॥ ८ ॥
अर्हं बरण सब सुख करन परम मंगलाचार ।
देवन देव निहार के आन पड़ा दरबार ॥ ९ ॥
श्रुत पारक इंद्रादि भी कहि न सकें गुण कोय ।
तुच्छ बुद्धि मतहीन मैं किम बरणूँ गुण तोय ॥ १० ॥
जैसे कोयल बाग़ में अम्बकली कर पान ।
डाल डाल करती फिरे मधु ऋतु में बरगान ॥ ११ ॥
त्यौं भक्तिबश होयकर करीऽस्तुति आज ।
हँसै बुद्ध जन देखकर पर मुझको नहिं लाज ॥ १२ ।
रचूँ भजन जिनराज के भक्ति भाव उर आन ।
छंद कला जानूँ नहीं शुध करियो गुणवान ॥ १३ ॥
जिन बाणी मानी जगत ज्ञान दीप की माल ।
जग जननी श्रुत दीजियो नमूँ शीस तिहुँकाल ॥ १४ ॥
अहो गुरू निर्ग्रंथ मुनी तारण तरण जहाज़ ।
न्यामत चरणन में पड़ा बेग सँवारो काज ॥ १५ ॥

(३)

न्यामत विलास सूची।

छंद दोहा।

हे शिव त्रियपति सन्मती तारण तरण जहाज़।
कर मंगल मंगल करन तीन लोक सरताज ॥ १ ॥
टुक मेरे हृदय धरो पद आनंद निवास।
तव गुण नित गायन करूँ रच नयमती विलास ॥ २ ॥
ले शरणा जिन राज का हो मन माहिं निशंक।
इस नयमती विलास के रचूँ एक सौ अंक ॥ ३ ॥
है येही आशा मेरी और है यही विचार।
करुणा निधि कृपा करो नैय्या उतरे पार ॥ ४ ॥
सूची इकसौं अंक की दूँ नीचे दर्शाय।
सब जन मन प्रमोद धर नित पढ़ियो मनलाय ॥ ५ ॥
पच्चीस अंक अब तक रचे जिनके नाम सँवार।
इस सूची में लिख दिये हैं सो लेउ निहार ॥ ६ ॥
बाक़ी जो जो अंक हैं गो है मंज़िल दूर।
आयु कर्म बाक़ी रहा तो पूरण करूँ ज़रूर ॥ ७ ॥

नोट—बीस अंक छप कर प्रकाशित हो चुके हैं जिनके सामने निम्न लिखित सूची में मूल्य लिखा गया है। बाक़ी अंक शीघ्र ही छपकर पबलिक के सामने आने वाले हैं।

नाम पुस्तक

१—जिनेन्द्र भजन माला ... ... ।)
२—जैन भजन रत्नावली ... ... ।)
३—जैन भजन पुष्पावली ... ... ।)
४—पंच कल्याणक, नाटक ... ... ।=)
५—न्यामत नीति ... ... =)
६—भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक ... ... ॥)

(४)

गायन शिक्षा।

(चाल) दोहा छन्द।

जिन वाणी माता नमूं हरत मोह अज्ञान।
निकसी मुख सर्वज्ञ से करत जीव कल्यान॥ १॥
भजन करन को रुचि भई जो जग माहीं सार।
बिना भजन के जानियो निरफल नर अवतार॥ २॥
गायन के जाने बिना भजन ठीक नहिं होय।
राग भाव समझे बिना गान करो मत कोय॥ ३॥
तातैं गंधर्व वेद की शिक्षा करूँ उच्चार।
सो सब तन मन बचन कर लीजो हृदय धार॥ ४॥

पहिले बंदूँ सरस्वती हो अज्ञान विनाश।
विघन हरे मंगल करे करे ज्ञान परकाश॥ ५॥
समय समय के राग हैं समय समय के गान।
समय समय गाना करो भाव भक्ति उर आन॥ ६॥
पद स्तोत्र भजनावली न्याय व्याकरण वेद।
बिना भाव बकवाद है चाहे करो सौ खेद॥ ७॥
आतम गुण सुमरण करो करो भजन कर ध्यान।
भाव सहित गाना करो होवे नित कल्यान॥ ८॥
तीन ग्राम अरु सात स्वर पहिले करलो याद।
ताल और लय जानकर पीछे करना नाद॥ ९॥
तज करके परमादको बैठो चतुर सुजान।
गोड़े दोनों मोड़ कर निर्भय सिंह समान॥१०॥
पूरब को निज मुँह करो या उत्तर कीं ओर।
ताल चूक स्वर चूक के मतना करियो शोर॥११॥
अल्प मन्द प्लुत स्वरों की क्रम से करो उच्चार।
उतर उतर चढ़ चढ़ उतर आलापो कई बार॥१२॥
समसे राग उठाइयो घुसकर समके माय।
तोड़ मींड लच गमक से राग भाव दर्शायं॥१३॥
दौड़ चलत अरु ठाय में राखो अपना ध्यान।
दुगुण तिगुण दिखलाइयो जो हो चतुर सुजान॥१४॥
सर न अड़ाना साज़ में अरु नहीं होना दूर।
सकल सभा प्रति दृष्टि धर दृष्टि करो मत क्रूर॥१५॥
चिल्ला कर गाना नहीं नहिं दांतों को भींच।
मन मन में गाना नहीं नहीं स्वांस को खींच॥१६॥

ऐसे स्वर से गावना सुनैं सभा के लोग।
लखौ काल द्रव्य भाव को और क्षेत्र का योग ॥१७॥
हाथ पाँव मत मारियो सर न हिलाओ बीर।
चटक मटक मत कीजियो रहो धीर गंभीर ॥१८॥
नाटक का गाना करो लीजे साज मंगाय।
हारमोनियम संग में तबला लेओ मिलाय ॥१९॥
मामूली गानों विषय सारंगी दे काम।
अरु सितार ढोलक सहित भजन करो स्वर थाम ॥२०॥
टाली खंजरी घूँगरू झांज ढफ़ खरतार।
ताउस बीन अरु बाँसुरी एक तार दो तार ॥२१॥
जल तरंग अरु चंग हैं बाजे विविध अनेक।
स्वरभंग हो मत गाइयो रहै तुम्हारी टेक ॥२२॥
अपने स्वर को साज के स्वर से लेओ मिलाय।
बिना मिले गाओ नहीं यह गुरु सीख सिखाय ॥२३॥
जो गाने के बीच में अलग साज से होय।
थम जावे फिर साज से मिल जावे सम जोय ॥२४॥
जो साजिन्दा साज को सके न ठीक बजाय।
ता संग हो गाओ नहीं नातर दोष लहाय ॥२५॥
एक राग जब गा चुको ठहर मिनट दो चार।
फेर अलापो दूसरा नहिं स्वर भंग निहार ॥२६॥
पोथी पुस्तक सामने रखियो चतुर सुजान।
चौकी पर धरियो सदा करो विनय तज मान ॥२७॥
उत्तम गाना रात को फिर जो मौक़ा होय।
दिन में भी गाना करो या में दोष न कोय ॥२८॥

गाना ऐसा गाइयो जो हो धर्म अनुकूल।
पापबंध जामें पड़ै गाओ कभी मत भूल ॥२६॥
भजन करो मंदिर विषय या कोई शुद्ध थान।
श्रोता बुधजन चाहिये शुद्ध भाव गुणवान ॥३०॥
इतनी शिक्षा मान कर बैठो सभा मंझार।
न्यामत निश्चय जानियों होय सदा जयकार ॥३१॥

नोट—संगीत विद्या का सम्पूर्ण हाल न्यामत संगीत दर्पण" (देखो पुस्तक नं० २१) में वर्णन किया गया है वहां देख लेना, यहां पर सिर्फ चन्द जरूरी जरूरी बातें लिखी गई हैं जिनका खयाल रखना हरएक गाने वाले के लिये ज़रूरी है ॥ शुभम् ॥

(५)

(राग) खम्माच—(ताल) द्रुत तीन ताल—(चाल) नाटक (मार्चिंग) यह राग उस वक्त गाया जाता है जिस वक्त सेना कूँच करती है और इसको अँगरेज़ी में बैन्ड कहते हैं।

(सरगम)

सागै सागै सागै मगरेसा, नीरे नीरे नीरे गारेसानि ॥
सागै सागै सारेगमपा, मगरेसा गारेसानि सासासा ॥
सासा रेसानीसा, रे रे गारे सारे, गागा मगरेसा, नीरेसा ॥
गागा मगरेसा मामामा, गागा मगरेसा रे रे रे ॥
पापा धपमगा, मामा पमगारे, गागा मगरेसा, नीरेसा ॥
सानिधप,नीधपमा,धपमगा,पमगारे,सागरेसा,गारेसानि सासासा
सानीधापामा गमपा, धानीसा नीधापामागम गमरे ॥
सानीधापामागमपा, मगरेसा गारेसानी सासासा ॥

जय जय वीरं स्वामी सन्मति, सारे ज्ञानी ध्यानी मुनिगण ॥
तुमको हे जिन नमता सदा, जय जय शिवपद के दाता ॥

हे जिन शिवपति, नाथं भगवति, गावें मुनि ऋषि, यशतेरा ॥
या श्री बृषपति हितकारी, या रत्नत्रय भंडारी ॥
जय जय श्रुतिपत, शंभव भगवत, नित्यं कृत्य कृत्य, जगदीश्वर
मुनिऋषि, रविशशि, गणपति, सुरपति, सुरनर, सबके शिवदाता॥
रागादि संघारार्थं, निज आतम हित कल्याणार्थं ।
हे जिनदेवा श्रीरूपा, नमिनमि न्यामत तुमदासा ॥
जय जय बीरं० ॥

(६)

(राग) असावरी (ताल) तीन ताल (चाल) बाला जयगोपाला नन्दलाल बृजबाला राधे हो ॥ इस राग पर नृत्य होता है ॥

जय नाथा सब ज्ञाता जगत्राता शिवदाता स्वामी हो (टेक)
तू अधार तुहि शरणसार तू करनहार भवपार
तू अपार तू तार्णहार तुझ नमस्कार सौबार
सुखदाता जगत्राता शिवदाता स्वामी हो ॥ जय० ॥१ ॥
तू गम्भीर तू धीर बीर तू अति बीर महाबीर ।
लोक लाज तूही सरताज सन्मतीराज जयवीर ।
जगनाथा जगत्राता शिवदाता स्वामी हो ॥ जय० ॥२॥
हम अवार मस्तक पसार कर नमस्कार हितधार ।
दयाधार न्यामत उद्धार प्रभु तार तार भवपार ।
सुखदाता जगत्राता शिवदाता स्वामी हो ॥ जय० ॥३॥

(७)

[राग] कल्याण खम्माच [ताल] तीन ताल [चाल] श्याम चुंदरिया दे दे मोरी ॥ इस पर चार लड़कों का नृत्य होता है ।

नाथ भ्रमणिया मेटो मोरी बार बार कर जोर नमत हूं ।
तुम स्वामी हितकारी आतम विहारी । भ्रमणिया० (टेक) ॥

आग पवन जल थल तन धारो। त्रस थावर बन मर मर हारो
प्यारे प्रभू अब कैसे करूँजी। भ्रमणिया० ॥ १ ॥
स्वर्ग नरक सारे फिर आयो। नेक नहीं कितहूँ सुख पायो
पायन प्रभू अब तोरे परूँजी। भ्रमणिया० ॥ २ ॥
काल अनंत निगोद मँझारी। जनम मरण भोगे दुख भारी
न्यामत शरण अब तेरी गहीजी। भ्रमणिया० ॥ ३ ॥

(८)

(राग) संकीर्ण (ताल) कहरवा (चाल) हाय सय्याँ पड़ूँ मैं तोरे पय्याँ सताओ काहे यहीं को।

हाँ रे प्राणी सुनोजी जैनवाणी न जाओ प्यारे कहीं को। (टेक)
जैन वाणी सदाही सुखदानी। हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ ॥
सारे जीवों की प्यारी मन मानी
मनमानी मोरे प्यारे। शिवदानी मोरे प्यारे ॥
अघटारी अबिकारी दुखहारी हितकारी ॥ हाँ रे प्राणी० ॥
जड़ता तो सारी तेरी दूर करेगी हाँ
तोहे ज्ञानी बनावे। न्यामत सुख पावे ॥
क्यों फिराय, कलपाय, भरमाय, दुखपाय ॥ हाँ रे प्राणी० ॥

(९)

(राग) नाटक (ताल) कहरवा।

मोरी नय्या पार लंघादो जगत पिता ॥ टेक ॥
तुम घट घट के अंतरयामी। दया धरम परचारक स्वामी ॥
तुम हरि ब्रह्मा तिहुं जगनामी। कर्मन बंध छुड़ादो जगत पिता ॥१॥

तत्वों का उपदेश सुनाया। सीधा शिव मारग दर्शाया ॥
आपा परका भेद बताया। भ्रम तम दूर हटादो जगता पिता ॥२॥
आन पड़ी मझधार में नय्या। कोई नहीं हितू बहन अरु भय्या ॥
प्रभू बनो तुम इसके खिवैया। भवदधि पार लंघादो जगत पिता ॥३॥
तू हितकारी पर उपकारी। तू सुखकारी दुख परहारी ॥
न्यामत लो प्रभु शरण तिहारी। आवागमन मिटादो जगत पिता ४॥

(१०)

(राग) नाटक (ताल) कहरवा (चाल) आली दर्शान है।

स्वामी महाबीर है। वह अती बीर है ॥
हां हां जयबीर है। जय जय जयकार हो ॥ १ ॥
सन्मति जिनराज है। सब का सरताज है ॥
तिहुं जगकी लाज है। तन मन निसार हो ॥ २ ॥
भगवत का ध्यान धरो। चिन्ता को दूर करो।
कर्मों को चूर करो। भवदध से पार हो ॥ ३ ॥
सब का उपकार करे। मुक्ती में बास करे ॥
न्यामत अर्दास करे। महिमा अपार है ॥ ४ ॥

(११)

(राग) नाटक (ताल) कहरवा (चाल) इस पर छव लड़कों का नृत्य होता है।

जय ऋषभेश्वर कृपा करो। भवसागर से पार करो ॥ टेक ॥
हितकारी जिनराज तुही। दुखहारी महाराज तुही।
करुणाकर, जगदीश्वर, पातक दूर करो ॥ जय० ॥ १ ॥
क्रोध कपट मद लोभ सभी। नहीं आवें मनमाहिं कभी।
परमातम, सुखदायक, हे जिन शान्ति करो ॥ जय० ॥ २ ॥

सत्यका हो उपदेश सदा। नहीं होवे अन्याय कदा।
धर्मेश्वर, जगनायक, आपद दूर करो ॥ जय० ॥ ३ ॥
निश दिन धर्माचार बढ़े। सब का दूराचार हटे।
शिव मारग, दर्शाकर, आलश दूर करो ॥ जय० ॥ ४ ॥
संकट मोचन नाथ तुही। केवल लोचन आप सही।
कर पावन, चितन्यामत, आरत दूर करो ॥ जय० ॥ ५ ॥

(१२)

(राग) नाटक (ताल) दादरा (चाल) सना खुदा की सना।
इस पर नृत्य होता है।

पिता जगत के पिता। पिता जगत के पिता ॥ टेक
न रागी न द्वेषी हितैषी महा। बस तुम्ही हो जगत के पिता।
तेरा दर्शन ज्ञान अनन्त सदा। बस० ॥ १ ॥
उद्धार हमारा उद्धार। उद्धार हमारा उद्धार।
सारी दुनिया का तुमने उद्धार किया। बस०
दया धर्म का सत उपदेश दिया। बस० ॥ २ ॥
धनवाद तुम्हारा धनवाद। धनवाद तुम्हारा धनवाद
सप्त तत्वों का ज्ञान प्रकाश किया। बस०
भ्रम मोह अविद्या का नाश किया। बस० ॥ ३ ॥
जिनराज हमारे सरताज। जिनराज हमारे सरताज
तुही ब्रह्मा हरी जगदीश महा। बस०
तूने मुक्ती का मारग दिया है बता। बस० ॥ ४ ॥
परणाम हमारा परणाम। परणाम हमारा परणाम
तेरी महिमा की सीमा का पार कहां। बस०
नमें न्यामत चरणों में शीस झुका। बस० ॥ ५ ॥

(१३)

(राग) नाटक (ताल) तीन (चाल) भ्रमरा चतरा कलले सलले प्रियपद ऊवे जन जान हमारो ॥ इस पर आठ लड़कों का नृत्य होता है (यह राग दक्षणी ज़ुबान में बंबई की तरफ़ गाया जाता है)।

तुमरा शरणा सुखदे नितदे, शिवपद श्री जिनराज हमारे।
सूरज चंदर मुनिजन ध्यावत, प्रियपद श्रीजिनराज तुम्हारे ॥१॥
तुमहो त्रिभुवन नायक ज्ञायक, ज्ञेय सब लोकालोक मझारे।
जनमन रंजन नाथ निरंजन, सब दुख भंजन बचन तुम्हारे ॥२॥
ध्यान धनुष कर धर कर तुमने, रागादिक सब असुर संहारे।
दे उपदेश दयामयी तुमने, भव्यजन भवदधि पार उतारे ॥३॥
गुण रत्नाकर तुम तुमरे गुण, गणधर सुरनर बर्णत हारे।
न्यामत अल्पमती किम बरणे, तुम महिमा प्रभु अपरंपारे ॥४॥

(१४)

(राग) कवाली (ताल) कहरवा (चाल) कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना।

रग़बतो नफ़रत नहीं मकरो दग़ा तुझमें नहीं।
बीतरागी तू प्रभू नख़वंत ज़रा तुझमें नहीं ॥ १ ॥
दूर अज़ जज़बात तू जिनराज तेरा नाम है।
है तू ज़ाते पाक और किब्रोरियां तुझमें नहीं ॥ २ ॥
जा बरो क़ाहिर नहीं है तामओ क़ासिर नहीं।
पुर ग़ज़ब भी तू नहीं जौरो जफ़ा तुझमें नहीं ॥ ३ ॥
कृश्चियन हिन्दू मुसलमां तुझको सारे एक हैं।
ख़ास से रग़बत नहीं नफ़रत ज़रा तुझमें नहीं ॥ ४ ॥
ईश्वरो ब्रह्मा हरीहर गौड हक़ परमात्मा।
हैं हज़ारों नाम तेरे इन्तहा तुझमें नहीं ॥ ५ ॥

बेकली बेताबियो तकलीफ़ बेचैनी नहीं ।
सच्चिदानंद रूप तू रंजो क़ज़ा तुझमें नहीं ॥ ६ ॥
कोई हैरानी नहीं हसरत परेशानी नहीं ।
ज़िद तमस्खुर भी नहीं हसदो गुमा तुझमें नहीं ॥ ७ ॥
तू न करता है न हरता है तू बस बेऐब है ।
दुनयबी झगड़ों का कोई भी निशां तुझमें नहीं ॥ ८ ॥
है तू नाज़िर सारी दुनिया है तुम्हारे ज्ञान में ।
पर न तुम दुनिया में और दुनिया ज़रा तुझमें नहीं ॥ ९ ॥
दोस्त दुश्मन तू नहीं हामी व ज़ामिन तू नहीं ।
तू दयामय शान्त रस कुल्फ़त ज़रा तुझमें नहीं ॥ १० ॥
सत्यवक्ता है तुहीं सादिक़ तुम्हारा है कलाम ।
खुद पसन्दी और खुदगर्ज़ी ज़रा तुझमें नहीं ॥ ११ ॥
न्यामत निश्चय किया तू बहरए औसाफ़ है ।
एब का नामो निशां कोई ज़रा तुझमें नहीं ॥ १२ ॥

(१५)

(चाल) हरिगीता छंद ॥

श्री जिन निरंजन जगत रंजन नाथ शिव बरनार के ।
जन जनम भंजन दुख निकंजन तीर्थंकर संसार के ॥१॥
ऐसे महन्त अरिहंत सन्मति के चरण चित धार के ।
रचना करूं धर्माभिनंदन छंद बंध सँवार के ॥२॥
प्रभु परम दाता अरु सुज्ञाता विश्व तत्व नसार के ।
शिव मार्ग नेता और भेता अष्ट कर्म पहार के ॥३॥
तारन तरन अशरण शरण कलिमल हरण संसार के ।
अर्हन वरण मंगल करण शिवपद धरन अवटार के ॥४॥

(१६)

(चाल) क़वाली (ताल-कहरवा) क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना।

श्रीपति जिनराज मेरी बेक़रारी देखलो।
विश्व लोचन दुख बिमोचन एक बारी देखलो ॥१॥
दुख बड़ा संसार में कर्मों से मैं लाचार हूँ।
रात दिन की इज़तराबी गिरियो ज़ारी देखलो ॥२॥
अपने मुँह से क्या कहूँ बेज़ार हूँ बेचैन हूँ।
आप हैं तिरकालदर्शी आप सारी देखलो ॥३॥
दुख उठाते क़ैद दुनियाँ में ज़माना हो गया।
अब नहीं ताक़त रही हालत हमारी देखलो ॥४॥
है हितू सब का तुही तेरे सिवा कोई नहीं।
दुख हरन सब सुख करन कल्याणकारी देखलो ॥५॥
हैं अनन्ती जीव तुमने मोक्ष में पहुँचा दिये।
न्यामत भी कर रहा है इन्तज़ारी देखलो ॥६॥

(१७)

[चाल] सवैया ३१।

बंदूं पंच परमेष्ट, सारे जग में सरेष्ट,
सर्व मंगल आदि यही, मंगल बताए हैं।
जिन बाणी जिन आलय, जिन धर्म जिन बिम्ब,
बंदूं नव पद सब, तीनों लोक माहीं हैं॥
बंदूं उमा स्वामी जग, नामी महा उपकारी,
जैन बैन ऐन दश, सूत्र माहीं गाए हैं।
तीन सो अठावन, सूत्र सारे जान लेओ,
सातों तत्वों के स्वरूप इनमें समाये हैं ॥१॥

(१८)
(चाल) सवैया ३१।

चौबीसों चालीस दो, बत्तीस एक एक,
ऐसे शत इंद्र पति, इंद्र सब आयके।
नव हरि प्रति हरि, नारद पदम नित,
बारह चक्रवर्ति ग्यारह, रुद्र मन लायके॥
चौवीसों कामदेव, मात तात जिनराय,
और चौदह कुलकर, चित हरषायके।
एकसो पैंतालीस, शलाका नर सेवें पद,
चौवीसों जिनेंद्र मैं भी, सेऊँ सर नायके॥१॥

(१६)
(चाल) सवैया ३१।

नमूँ गुरु निर्ग्रंथ, अरिमित एक चित,
जानत एक नित्य, कंचन तिरनको।
आठ वीस गुण लहें, बाईस परीषह सहैं,
धर्म उपदेश कहें, जगसे तिरनको॥
शीत सरवर तीर, ग्रीषम शिखर गिर,
पावस वृक्ष जारें, जम्मन मरनको।
बाईस अभक्ष टारें, पंचमहाव्रत धारें,
बारह विधि तपसारें, करम हरनको॥१॥

(२०)
(चाल) सवैया ३१।

नमूं भवसुख दानी, शिवपुर की निशानी,
तीनों ही जगत मानी, ऐसी जिनवानी है।

जगका अँधेर मोड़, करमों का फंद तोड़,
मनका भरम फोड़, शिवपद दानी है ॥
स्याद्वादसप्तभंग, परमाण बारह अंग,
षट्मत माहीं चंग, देखो नाहीं छानी है ।
तिहुँ जग उजियाल, शुद्ध ज्ञान दीप माल,
कुज्ञान दैत्य काल, भाषी पंच ज्ञानी है ॥१॥

(२१)

(चाल) सवैया ३१ ।

चौरासी के फेर में, अनादि काल दुःख भरो,
शुभ के संयोग से, मनुष भव पायो है ।
जंबू दीप आरज, खंड हरयाना देश,
टौमसेन राज हाँसी, नगर कहायो है ॥
राखी वंश अग्रवाल, श्रावक गोत गर,
दिगाम्बर जैन धर्म, मेरे मन भायो है ।
अबके जो चौथा काल आवे तो हमारे प्रभु,
शिवपद दीजे, न्यायमत सर न्यायो है ॥१॥

(२२)

(राग) संकीर्ण (ताल) कहरवा (चाल) मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंगर वाले ।

वही है शिवदेवी का लाल सीधा राह बताने वाला ।
सीधा राह बताने वाला और पापों से बचाने वाला (टेक) ॥
वह है सुमत ज्ञान परकाश करता है जो उसकी आस ।
करदे सर्ब करम का नाश वही है पीर हटाने वाला ॥१॥

कहो धनबाद श्री जिनराज वह ही है सबका सरताज।
रक्खे बाँह गहे की लाज वही है धीर बँधाने वाला ॥२॥
यह है जैन धरम तासीर हरे जो छिन में सब की पीर।
बोलो जय हो श्री महावीर वही शिव मार्ग दिखाने वाला ॥३॥

(२३)

[चाल] नाटक [ताल कहरवा] शादरे दूलहा दुलहन हमेशा रहे शादरे!

बादरे जैन वाणी का गावो धनबाद रे (टेक)।
सत मारग दर्शावन हारी महिमा है अपरम पारी ॥ बादरे ॥
खोलदी है परणति सातों तत्वों का न्यारी न्यारी।
हितकारी, सुखकारी, न्यामत है पाप टारी सारी ॥ बादरे० ॥

(२४)

(चाल) इन्द्रसभा घर से यहाँ कौन खुदा के लिये लाया मुझको।

धन्य वह शैल जहाँ से गए लाखों निर्वाण।
धन्य वह शैल जिसे देख हो सब का कल्याण ॥ १ ॥
धन अगर, जैनका कुछ है तो समझलो यह है।
नाम गर जैनका कुछ है तो समझलो यह है ॥ २ ॥
आज कुछ धर्मकी मर्याद समझलो यह है।
जैनकी दुनिया में बुनियाद समझलो यह है ॥ ३ ॥
है यही जैन धरमकी तो सभी आनो कान।
जैन की हिन्द में समझो तो इसीसे है शान ॥ ४ ॥
आज लो वह ही शिखर हमसे छुटा जाता है।
जैन का मालो मता आज लुटा जाता है ॥ ५ ॥

आज जिन धर्मका परचार घटा जाता है।
या यों कह दीजे कि हक़ जैन हटा जाता है ॥ ६ ॥
है मुनासिब कि सभी मिलके करो इसका ध्यान।
न्यायमत जगमें रहे नाम हो सबका कल्यान ॥ ७ ॥

(२५)

(चाल) कवाली (ताल) कहर्वा। इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

फ़लक पर आज क्यों क़शमः नुमांई होती जाती है।
ज़मी पर भी यकायक क्यों सफ़ाई होती जाती है ॥१॥
छहों ऋतु के खिले हैं फूल क्यों एक दम ज़माने में।
हर इक गुंचे में देखो पुरफ़िज़ाई होती जाती है ॥२॥
क्यों जय जयकार की हरसू सदा कानों में आती है।
सभों की आज क्यों हाजत बराई होती जाती है ॥३॥
आज क्यों ऐसी मन भावन पवन दुनिया में चलती है।
दिलों में ख़ुदबख़ुद आनन्दताई होती जाती है ॥४॥
आज क्यों आसमाँ से बूंद गंधोदक की पड़ती हैं।
मुअत्तिर आज क्यों सारी ख़ुदाई होती जाती है ॥५॥
विरोधी जीव कैसे आज मिल आपस में बैठे हैं।
दिलों में किस तरह यों एकताई होती जाती है ॥६॥
खिरी है मागधी बाणी आज किस तत्व ज्ञानी की।
आपसे आप जो उक़दा कुशाई होती जाती है ॥७॥
धरमचक्र और मंगलद्रव्य अजब तासीर रखते हैं।
बुराई दूर हो करके भलाई होती जाती है ॥८॥

रखेगा कौन यहाँ आकर तरन तारन चरण अपने।
कमल ज़र्री से जिसकी पेशवाई होती जाती है ॥९॥
समोसर्ण आज धनपति ने रचा है कैसा मनमोहन।
सुरासुर हर बशर की दिल रुबाई होती जाती है ॥१०॥
हुआ है आज केवल ज्ञान श्रीमहावीर स्वामी को।
सब उसकी न्यायमत जलवा नुमाई होती जाती है ॥११॥

(२६)

(राग) कव्वाली (ताल) कहरवा (चाल) कत्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना।

दौर सतयुग में धरम की इबतदा तूही तो था।
जामए इन्सान में जलवे नुमा तूही तो था ॥ १ ॥
था तुही आदि सुविध करतार तू आदीश जिन।
धर्म की मर्याद और सतकी बिना तूही तो था ॥२॥
दौर सोयम तक कोई रहबर न आता था नज़र।
मोक्षके मारग का अव्वल रहनुमा तूही तो था ॥३॥
तत्व की परणति बताता कौन था किसकी मजाल।
विश्व की हालत दिखाने को शुआ तूही तो था ॥४॥
कर्म कोहे सारका बेशक तुही था बेखकन।
सब चराचर का हितू मुश्किल कुशा तूही तो था ॥५॥
यह जगत किसने रचा था भर्म में सारा जहाँ।
है अनादि रूप यह उक़दः कुशा तूही तो था ॥६॥
जाल दुनिया में मुसीबत में पड़े थे मुबतिला।
सब का इक फ़र्याद रस हाजत बरा तूही तो था ॥७॥

मान माया लोभ से ख़ाली नहीं कोई बशर।
दूर अज़ जज़बात और किबरोरिया तूही तो था ॥८॥
सब हरीहर काम ब्रह्मा कंच खंड आए नजर।
एक दुरेनायाब रत्ने बेबहा तूही तो था ॥९॥
इंद्र भी औसाफ़ तेरे किस तरह करता बयाँ।
इबतदा तुझमें न थी लाइन्तहा तूही तो था ॥१०॥
सर झुकाता न्यायमत तेरे सिवा किस के लिये।
सबका तू माबूद और सिजदे की जा तूही तो था ॥११॥

(२७)

(चाल) रसिया (ताल) कहरवा॥ काँटा लागोरे देवरिया मोसे संग चलो ना जाय।

चेतो चेतोरे चेतनवा, मानुष जनम रतन मत खोय।
जनम रतन मत खोय, मगमें काँटे शूल न बोय (टेक)
मतना रागी देव मनावे, मत मिथ्या बाणी मन लावे।
विष अमृत ना होय, मानुष० ॥ १ ॥
सुन चेतन जिनमत की बाणी, हितकारी शिवपदकी दानी।
पाप करम मल धोय, मानुष० ॥ २ ॥
छिन छिनमें आयू घट जावे, वक़ गया फिर हाथ न आवे।
जाग पड़ा मत सोय, मानुष० ॥ ३ ॥
न्यामत सुनले सीख सियानी, जो भाषी जिन केवलज्ञानी।
भव भव में सुख होय, मानुष० ॥ ४ ॥

(२८)

(चाल) रसिया (ताल-कहरवा) कांटा लागो रे देवरिया मोसे संग चलो ना जाय।

क्यों परमादी रे चेतनवा तोसे धर्म करो ना जाय।
धर्म करो ना जाय प्रभु का कर्म करो ना जाय ॥क्यों०॥टेक॥
निस दिन विषय भोग में राचा, क्रोध लोभ माया मद माचा।
पाप करे मन लाय, ॥ तोसे धर्म० ॥ १ ॥
खेल तमाशों में निश खोवे, सारी रात खड़ा मुख जोवे।
धर्म सुने सो जाय॥ तोसे धर्म० ॥ २ ॥
पाप करम कर द्रव्य कमावे, पाप हेत पर लाख लुटावे।
दान करत दुख पाय ॥ तोसे धर्म० ॥ ३ ॥
परबस भूख मरे दुख पावे, कष्ट सहे कुछ पार न जावे।
ध्यान धरो ना जाय ॥ तोसे धर्म० ॥ ४ ॥
न्यामत सुन प्यारे जिन बानी, भव भव में होवे सुखदानी।
अन्त मुकति ले जाय ॥ तोसे धर्म० ॥ ५ ॥

(२६)

(चाल) काफ़ी (ताल दीपचंदी) श्याम मासे खेलो ना होरी।

आत ऐसी खेलिये होरी, जामें हो हित तोरी (टेक)
प्रेम गुलाल मलो मुख ऊपर, सुमता से फाग रचोरी।
क्रोध लोभ मद काष्ट जला कर, फूँक देओ जैसी होरी ॥आत०॥१॥
झूठ कपट तज होरी खेलो, निज कल्याण करोजी।
कुंकुम संयम सील बनावो, डारो भर भर झोरी ॥आत०॥२॥
न्यामत ऐसी होरी खेलो, आतम ध्यान धरोजी।
राग द्वेष मन दूर करो सब, छोडो निठुर जोरा जोरी ॥आत०॥३॥

(३०)

(चाल) नाटक (ताल-कहरवा) अलबेला छैला ऐसा लावेंगे बड़ी शानका।

सुन चेतन प्यारे काया का मतना अभिमान कर।
मत मान कर, कुछ ज्ञान कर, टुक ध्यान कर ।सुन०॥टेक॥
बड़े बाण चलाने वाले धनुर्धर अर्जुन
भीम गदा फिराने वाले अरिदल खंडन
बड़ी बातें बनाने वाले दुष्ट दुर्योधन
सती चीर हटाने वाले अरि दुःशासन
कहाँ गए भीषम, कहाँ गए विक्रम ॥ १ ॥
कैलाश हिलाने वाले जोधा रावन
कहाँ लंका जलाने वाले हनुमत राजन
हरि नख पै उठाने वाले गिरि गोवर्द्धन
रावन के गिराने वाले रघुबर लछमन
बड़े बलकारे, कहाँ गए सारे,
न्यामत पता हू न पायो ॥ मत मानकर० ॥ २ ॥

(३१)

(चाल) कव्वाली (ताल) कहर्वा—कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना॥

आपको भूला है तू क्यों सोहबते अग़यार में।
ढूंढता फिरता है तू क्या गुलशने संसार में ॥ १ ॥
हैफ़ है सद हैफ़ है गुलचीं तेरी औक़ात पर।
चंदरोज़ा फूल की ख़ातिर तु उलझा ख़ार में ॥ २ ॥
बेवफ़ाई देख दुनियां की तू चश्मे ग़ौर से।
मुबतला किस किस को इसने करदिया आज़ार में ॥ ३ ॥

राम लछमन जंगलों में फिर रहे हैं बेख़ता।
हरिश्चंद रोतास तारा बिक रहे बाज़ार में ॥ ४ ॥
क़ैद में रावण के सीता है निहायत ही उदास।
अंजना सी रो रही है दश्त में अशजार में ॥ ५ ॥
भीम अर्जुन से जरी मंगते बने हैं बेक़सूर।
सेठ सुदर्शन को लटकाया है नख़ले दार में ॥ ६ ॥
फिर तवक्के न्यायमत दुनिया की तुझको है अबस।
जो कोई इसका हुआ डूबा वही मंझधार में ॥ ७ ॥

(३२)

(राग) संकीर्ण भैरवी (ताल) कहरवा (चाल)—हाय अच्छे पिया मोहे देश बुलालो, हिन्द में जी घबरावत है ॥

तूतो चेतन सार अनंत अनादी, काहे को जी भरमावत है (टेक)
जगत में देख किसी को सदा क़रार नहीं ॥
सभी असार हैं दुनियां में कोई सार नहीं।
है राजपाट ज़नोज़र ज़मीन तो किसकी ॥
बदन का उम्र जवानी का एतबार नहीं।
तजके परणति भजले निज आतम, क्यों जगलख दुख पावत है ॥१॥
विषोंमें भोगोंमें क्यों अपना जी लगाता है।
क्यों खेल कूद में तू रात दिन गवाँता है ॥
है इंद्रजाल सा समझो तमाशा दुनिया का।
तू झूठी ज़ाहरी सूरत पे क्यों लुभाता है ॥
न्यामत लेले शरण जिनराज चरण की; काहे को देर लगावत है ॥२॥

(३३)

(राग) पहाड़ी संकीर्ण (ताल) कहरवा (चाल) मोरि लाल चुंदरिया पे रंग बरसे

(यह भजन स्त्रियों के वास्ते हैं)॥

प्यारी बहनों जगतमें धरम करलो, धरम करलोरी धरम करलो॥टेक॥
न्हाधोके पहिले तो मंदिरमें जाओ, जीवनको अपने सुफल करलो॥१॥
दर्शन करो ध्यान मनमें जमाओ, पापों को प्यारी तुरत हरलो॥२॥
बैठो विनयसे सुनो जैन बानी, ज्ञानी की बातें हिये धरलो॥३॥
न्यामत करो दान संयमको पालो, मुक्ती की प्यारी डगर पड़लो॥४॥

(३४)

(राग) नाटक (चाल) गावोरी सब मिल के बधय्यां॥

छाये जी घन शुभ के बदरवा॥ टेक॥
पारश प्रभु निज जनम लियो है।
चुन चुन के फूल बरसावो जी यश गावोजी॥ घन०॥
सच्ची सरकार हैं। सबके हितकार है।
सबको सुखकार हैं। न्यामत बलिहार हैं॥ छाये जी०॥

(३५)

(राग) खमाच (चाल)—कैसा धोका पिया मोसे कर गयोरी॥

कैसा धोका करम मोसे कर गयोजी॥ टेक॥
विषय में भोग में निशदिन फँसादिया मुझको।
सुपथ भुलाके कुमारग लगादिया मुझको॥
स्वरूप मेरा जो था सो भुलादिया मुझको।
फिराके चारों गति में रुलादिया मुझको॥
मेरा सारा जनम तो बिगड़ गयोजी॥ १॥

न दान पूजा का कुछ ध्यान मुझको आता है।
न जैन ज्ञानीका उपदेश मनको भाता है॥
शरण में तेरी प्रभू न्यायमत अब आता है।
सुपथ लगादो कि चरणों में सर झुकाता है॥
भ्रमते भ्रमते ज़माना गुज़र गयो जी॥ २॥

(३६)

(राग)—लच्छी पंजावी (चाल)—हां हां री लच्छी तेरे वंदना वने॥

हाँ हाँ रे चेतन मनमें सोचतो ज़रा॥
सोचतो ज़रा, टुक देखतो ज़रा।
ऐसा अवसर ना मिलेगा प्यारे सोचतो ज़रा॥ टेक॥
हाँ अनादि से निगोद रहा।
निगोद में रहा त्रस थावर बना। दुख पाए अपारे॥मन०॥१॥
काल अनन्त तिर्यंच हो फिरा।
तिर्यंच हो फिरा फेर नारकी बना। कछु काम ना सुधारे॥मन०॥२॥
स्वपर विवेक तूने कछु ना किया।
कछु न किया यूँहीं भ्रमता फिरा। दिन वृथा गवाँए॥मन०॥३॥
दुर्लभ मनुष्य पर्याय है मिली।
पर्याय है मिली जैन कुल में भली। जीती बाज़ी ना हारे॥मन०॥४॥
जिनमत को पाके विषय भोग ना करे।
भोग ना करे मन कषाय ना धरे। कहै न्यामत पुकारे॥मन०॥५॥

(३७)

(राग)—श्याम कल्याण लहरा (चाल)—जा मन मोहन श्याम मुरारी॥

नोट—श्री शिखर जी की यात्रा मिति माघ सुदि १२ सम्वत् विक्रम १९७४ को हमने हिसार व हाँसी के संघ सहित करी॥ श्री शिखर जी पर बीस

आम्नाय पंथ की कोठी में हकीम सन्मतिकुमार जी आरे वाले भाइयों की तरफ़ से रहते हैं और यात्रियों की यथायोग्य चिकित्सा करते हैं॥ उनके आग्रह करने से यह आरती शिखर जी पर ही बनाई गई थी॥ सारांश यह है कि श्रीमति कनकमालाकुमरि लाला अजितप्रसाद आरानिवासी की पत्नि ने सम्वत् १६७० में श्री शंभवनाथ जी महाराज का जैन मंदिर बनवाया था उस मंदिर के लिये आरती बना कर हकीम जी साहब की मार्फ़त श्रीमति कनकमालाकुमरि देवी के पास भेजी गई जैसा कि उनका मनशा था॥

जय जिन शंभव शिव दातारी, भव दुखहारी सब सुखकारी ॥टेक॥
सावस्ती अवतार लियो है, भवि जन को शिव मग नेतारी।
हाथ जोड़ हम करत आरती, तार तार हे करुणा धारी॥ जय० ॥१॥
जितसेना राजा घर जन्मे, सेन मात चित आनंदकारी।
धनुष चारसौ उन्नत काया, आयू सठ लख पूरबधारी॥ जय० ॥२
चार घातिया घात प्रभू तुम, केवल ज्ञान कला विस्तारी।
धवल कूट सम्मेदाचल से, जाय बरी शिव सुंदर नारी॥ जय० ॥३।
तिहुँ जग लोचन पाप विमोचन, कर्म कुलाचल के भेतारी।
तारण तरण सुनो यश तेरो, न्यामत ली प्रभु शरण तिहारी॥जय०॥

(३८)

(राग)—भैरवी नाटक (चाल)—पनियाँ भरन को मैं कैसे प्यारी जाऊं॥

पाप हरन को मैं तेरी शरण आऊँ॥ टेक॥
तू सुखकारी जग हितकारी, शान्ति चरण पे मैं वारी वारी जाऊँ॥१।
छाँडत नाहीं कर्म डगरवा, मुक्ती नगर को मैं कौन विधि जाऊँ॥२।
काल अनन्ते भ्रमते बीतो, स्वपर भेद को मैं कौन दिन पाऊँ॥३।
न्यामत को प्रभु दर्शन दीजे, उमंग उमंग के मैं तेरे गुण गाऊँ॥४

(३९)

(राग)—नाटक (चाल)—दिन रतियाँ ना छेड़ो मैय्याँ. छोड़ो त्रैय्याँ धरकत छतियाँ, फरकत अँखियाँ हाँ ॥

जिन शरणा आ लेलो भाई, है सुखदाई,
तोहें ले गई शिवपुर माही हाँ ॥ टेक ॥
जिन वाणी हृदय धारो, हाँ मिथ्या भाव निवारो ॥ हाँ जिन शरणा० ॥
क्रोध लोभ माया मद सारे, विषय भोग नाना परकारे।
शिव मारग के रोकन हारे, ले डूबें तोहें मझधारे ॥
पास को न जा, जिया ना लगा, न्यायमत हां, मानले कहा,
हां हां हां हां हां हां हां हां जिन शरणा० ॥ १ ॥

(४०)

(राग)–क़वाली (ताल)–कहरवा (चाल)–क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

तूही पछताएगा चेतन चाल क्या उलटी चले।
अबतो जिनमत के वचन तुझको नहीं लगते भले ॥ १ ॥
रात दिन राचा फिरे है इंद्रियों के भोग में।
आपही फंदे बना कर डालता अपने गले ॥ २ ॥
क्रोध माया मान मद से क्या करे है दोस्ती।
यह ही बन जायँगे दुश्मन जब कोई मौक़ा मिले ॥ ३ ॥
न्यायमत कहते हैं हम तेरे भले के वास्ते।
छोड़ उलटी चाल को जिन धर्म सीधा पंथले ॥ ४ ॥

(४१)

(राग)—असावरी (ताल) तीन (चाल)—काहे मचावे शोर पपीहा ॥

देखो ज़रा कर गौर प्रानी ॥ टेक ॥
राजा जांगे जागी रानी। पंडित मूरख किरपन दानी।

जावेंगे सब छोड़ । प्रानी ॥ १ ॥
संतोषी लोभी अभिमानी । सरल स्वभावी कपटी ज्ञानी ।
जावेंगे मुख मोड़ । प्रानी ॥ २ ॥
सूरज चंदर पवन और पानी । पावक मिट्टी तख्त निशानी ।
सब सावन की लोर । प्रानी ॥ ३ ॥
जिस जिसने विकलपता ठानी, डूबेंगे सारे बिन पानी ।
कर्म अती बल जोर । प्रानी० ॥ ४ ॥
न्यामत सुन इक सीख सयानी । कर संतोष सुनो जिन बानी ॥
काहे करे झकझोर । प्रानी० ॥ ५ ॥

(४२)

(राग)—सोरठा (चाल)—कान्हा मुरली दे दे मोय ॥

अपने निजपद को मत खोय, चेतन मैं समझाऊं तोय ॥टेक॥
विकट पंथ जाना है तुझको, मारग में मत सोय ।
ज्ञान गठरिया लुट जावेगी, तू ग़ाफिल मत होय ॥अपने० ॥१॥
मतना विषय भोग में राचे, मत परनारी जोय ।
आप बड़ाई पर निंदा मतकर, जो चातुर होय ॥ अपने० ॥२॥
धरम कलप तरु शिव फल दायक, मत काटे मत खोय ।
पछतावेगा मूरख चेतन, पाप बबूल न बोय ॥ अपने० ॥३॥
पर परणति को तजदे न्यामत, सब अंतर रज धोय ।
विषय कषाय हलाहल तजकर, पी निज आनंद तोय ॥ अपने० ॥४॥

(४३)

(चाल) रिवाड़ी वालों की (मतकर चेतन छल की बतियाँ)
यह भजन स्त्रियों के लिये है ॥

कड़ी बात किसी से ना बोलो । ना बोलो अरी ना बोलो ॥टेक॥
सास ननंद का कहना मानो । अमृत में विष ना घोलो ॥ १ ॥
सबसे मेल करो मिल बैठो । आपस में हंस हंस बोलो ॥ २ ॥
न्यामत मान करो मत कोई । मतना गर्व बचन बोलो ॥ ३ ॥

(राग)—कान्हड़ा (चाल)—घर जाने दे छांड़ दे मोरी बैयां ॥

हट जाने दे छांड़दे छल बतियां ।
श्री जिनराज उपदेश करत है, बार बार समझैयां ॥ हट० ॥
विषय कषाय महा दुखदाई, ले जावें दुर्गतियां ॥ हट० ॥१॥
मिथ्या भाव न मनमें लाओ, भव भव में दुख भरियां ॥हट०॥२॥
जिन बानी को हिरदे धारो, न्यामत शिव पद बसियां ॥हट०॥३॥

(४४)

(राग)—क़वाली (ताल) कहरवा (चाल)—यह कैसे बाल बिखरे हैं
यह क्यों सूरत बनी ग़म की ॥

आज कल धर्म से क्यों लोग बदज़न होते जाते हैं ।
दुखी मूरख अधर्मी नीच निर्धन होते जाते हैं ॥ १ ॥
विमुख जिन मत से देखो कर दिया किसने ज़माने को ।
नज़र आते थे जो सज्जन वह दुर्जन होते जाते हैं ॥ २ ॥
न आपस में वफ़ादारी मुहब्बत उठ गई सारी ।
अबस है महर्बां भी आज दुश्मन होते जाते हैं ॥ ३ ॥
ब्याह में काज में लाखों लुटा देते हैं धन अपना ।
मगर विद्या की ख़ातिर क्यों यह किरपन होते जाते हैं ॥ ४ ॥

समझ लीजे कि यह सारे अविद्या के करिशमें हैं।
अजैनी दुर्मती जैनी दिनोदिन होते जाते हैं ॥ ५ ॥
अभी तक कुछ नहीं बिगड़ा संभल जाओ संभल जाओ।
वगर ना देखना क्या क्या धरम बिन होते जाते हैं ॥ ६ ॥
गैर क़ौमें जो पीछे थीं लोग नादान मूरख थे।
आज कालिज बना करके वह बुध जन होते जाते हैं ॥ ७ ॥
धरम की क़ौम की बुनियाद गर कोई है तो कलिज है।
बिना विद्या अनारज वा क्रिसचन होते जाते हैं ॥ ८ ॥
तरक्की जैनमत चाहो जैन का खोलदो कालेज।
न्ययमत इसके हामी अब गुणी जन होते जाते हैं ॥ ९ ॥

(४५)

(राग)—क़वाली (ताल) कहरवा (चाल)—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ॥

सर अपना ख्वाब ग़फलत से उठाना ही मुनासिब है।
बहुत से सो चुके आलस हटाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
ख़बर भी है कि क्या हालत है दुनिया में जैन मत की।
हैं बाक़ी लाख दश बारह बचाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
और क़ौमें धड़ाधड़ रात दिन कालेज बनाती हैं।
तुम्हें भी एकतो कालेज बनाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
कमर बांधो उठो साहब नहीं है वक्त सोने का।
ख्वाब ग़फलत में सोतों को जगाना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥
जगाने वाले थे अफ़सोस वह भी हो गये ग़ाफ़िल।
न्यायमत अब तुम्हें डंका बजाना ही मुनासिब है ॥ ५ ॥

(४६)

(राग) लावनी (ताल) कहरवा (चाल) सदा नहीं रहने का मेरी जान हुसन पर यूँहीं अकड़ते हो ॥

तेरे दर्शन से श्री गिरिराज हिये परमानंद बढ़ते हैं। (टेक)
देश देश के श्रावक आकर पूजा करते हैं ॥
शुद्ध भाव कर जनम जनम के पातिक हरते हैं।
सभी का होता है कल्यान, ध्यान जो मनमें धरते हैं ॥ १ ॥
दिल्ली मेरठ टौंक आगरा करहल स्याम अनाम।
मारवाड़ गुजरात बरेली और बढ़ार आसाम।
बंबई दक्खन सूरत रतलाम, सभी चरणों में पड़ते हैं ॥ २ ॥
काँशी मथुरा अलाहबाद और मध्यदेश बरढान।
रावलपिंडी अमृतसर क्या काश्मीरं मुलतान।
गरज़ सारीही हिन्दुस्तान ध्यान हिरदे में धरते हैं ॥ ३ ॥
बागड़ हरियाना कुरु जयपुर कलकत्ता बंगाल।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्खन सिकम और नहपाल।
सहारनपुर और नैणीताल तेरा अर्चन सब करते हैं ॥ ४ ॥
लंका और मदरास उदयपुर सारी बीकानीर।
कच्छ काठियावाड़ किरांची खंडवा जयसलमीर।
गर गंगा यमुना के तीर सभी आ दर्शन करते हैं ॥ ५ ॥
[illegible]कट मंगलोर गुहाना रोहतक और करनाल।
सून[illegible] पानीपत खुरजा जब्बलपुर भूपाल।
रिवाड़ी [illegible]लियर हरसाल तेरी परकरमन करते हैं ॥ ६ ॥
जालंधर [illegible]ना ढाका आरा अटक विहार।
कानपूर अज[illegible] बड़ोदा हांसी और हिसार।

जींद नाभा सारे हितधार तेरे गुण वर्णन करते हैं ॥ ७ ॥
पालगंज मैसूर उड़ीसा बरमा फ़ैज़ाबाद।
विंध्याचल अरवली सिंध लखनऊ हैदराबाद।
जोधपुर भरत अहमदाबाद तेरे गुण गायन करते हैं ॥ ८।
पटना पूना गया कालका त्रिचनापली तिंजोर।
सिमला और रंगून नर्बदा फ़िरोज़पुर लाहोर।
अवध रोहेलखंड बंगलोर शीश चरणों में धरते हैं ॥ ९ ॥
तूही है मर्याद धरम की तू है तीरथराज।
आन कान तू शान जैन की तू है धरम की लाज।
कि सारे नर और नारी आज तेरा मिल अर्चन करते हैं ॥१०।
न्यामत सम्मेदाचल तीरथ नहीं किसी की मेर।
सब मिल अपना जनम सुधारो तजो विरोध की टेर।
दिगांबर स्वेतांबर कर मेर वृथा क्यों लड़ लड़ मरते हैं ॥ ११ ।

(४७)

(राग) नाटक (ताल) कहरवा (चाल) तुम्हें काहे का एता फ़िकर है ॥

जिन चरणोंमें अपना जो सर है, नहीं कर्मों का कोई ख़तर है। टेक।
आतम से ध्यान लाया है, पर परणति को छिटकाया है।
भ्रम हटा, मोह घटा, जिनबाणी में जी लगा
न्यामत न कोई फ़िकर है, जिन चरणों में० ॥ १ ।

(४८)

(राग) रसिया (ताल) कहरवा (चाल) कांटा लागो रे साँवरिया मोसे गैल चला ना जाय ॥

होके चेतन आनद रूप, कैसे फंसा मोह के जाल ।
फंसा मोह के जाल, चलकर उलटी टेढ़ी चाल ॥ (टेक)
होगया महा विकल संसारी, करके राग द्वेष भ्रम भारी
फिरे ज्यूं अरहट माल । कैसे० ॥ २ ॥
हिंसारंभ करत सुख माने, मृषा बोल चातुरता ठाने
पर धन हर खुशहाल। कैसे० ॥ २ ॥
कथनी कथित महंत कहावे, वेद पढ़े मद मनमें लावे।
ममता मूल न टाल । कैसे० ॥ ३ ॥
जड़सों राच परम पद साधे, विना विवेक धम्म आराधे ।
थँमे न जल बिन पाल । कैसे० ॥ ४ ॥
न्यामत कहै सुनो सुरज्ञानी, यह करनी सारी दुख दानी
विना धान की प्राल । कैसे० ॥ ३ ॥

(४६)

(राग) क़वाली (ताल) कहरवा (चाल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह सूरत क्यों बनी ग़म की ॥

सदा संतोष कर प्रानी अगर सुख से रहा चाहे
घटादे मनकी तृष्णा को अगर अपना भला चाहे ॥ १ ॥
आगमें जिस क़दर ईंधन, पड़ेगा जोति ऊंची हो
बढ़ा मत लोभ की अग्नी, अगर दुख से बचा चाहे ॥ २ ॥
वही धनवान है जगमें, लोभ जिसके नहीं मनमें
वह निर्धन रंक होता है, जो परधन को हरा चाहे ॥ ३ ॥

दुखी रहते हैं वह निशदिन, जो आरत ध्यान करते हैं
न कर लालच अगर आज़ाद रहने का मज़ा चाहे ॥ ४ ॥
बिना मांगे मिले मोती, न्यायमत देख दुनिया में
भीख मांगी नहीं मिलती, अगर कोई गदा चाहे ॥ ५ ॥

(५०)

(राग) कव्वाली (ताल) कहरवा (चाल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़म की ॥

परम ज्योती परम पावन धरम की इबतदा तुम हो।
तुम्हारे ज्ञान में सब है, मगर सबसे जुदा तुमहो ॥ १ ॥
हज़ारों मुश्किलें झूठे, अक़ीदे बहम दुनिया में।
तुहीं मुश्किल कुशा हाजत, बरा उक़दे कुशा तुमहो ॥ २ ॥
कोई लोभी कोई मानी, कोई मिथ्यात श्रद्धानी।
धरम की शील संयम की, ध्वजा सत की बिना तुमहो ॥३॥
जगतमें हर तरफ़ अज्ञान का, अंधेर छाया है।
अंधेरी रैनमें शिव मग के, सादिक़ रहनुमा तुमहो ॥ ४ ॥
नहीं मुमकिन कोई औसाफ़, तेरे कर सके वर्णन।
अजर तुमहो अमर तुमहो, अगम ला इंतहा तुमहो ॥ ५ ॥
प्रभू अब न्यायमत को भी, लगादो मोक्ष मारग में।
तुम्हीं बंधू बिना कारण, हितू परमात्मा तुमहो ॥ ६ ॥

॥ इति शुभम् ॥

इति श्रीजिनेन्द्र भजनमाला समाप्तम् ॥

* नोटिस *

न्यामतविलास के निम्न लिखित भाग तैयार हो चुके हैं।

		हिन्दी	उर्दू
१	जिनेन्द्र भजन माला	।)	०
२	जैन भजन रत्नावली	।)	०
३	जैन भजन पुष्पावली	।)	०
४	पंच कल्याणक नाटक	।=)	०
५	न्यामत नीति	=)	०
६	भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक	॥)	०
७	जैन भजन मुक्तावली	=)	०
८	राजल भजन एकादशी	-)	०
९	श्रीगान जैन भजन पचीसी	-)॥	०
१०	कलयुग लीला भजनावली	-)॥	-)॥
११	कुन्ती नाटक	=)	०
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	॥=)	।=)
१३	अनाथ रुदन	-)	०
१४	जैन फालें ग भजनावली	=)	०
१५	राम चरित्र भजन मंजरी	॥)	०
१६	राजल वैराग माला	=)	०
१७	ईश्वर सरूप दर्पण	=)	०
१८	जैन भजन शतक	।)	०
१९	थियेट्रिकल जैन भजन मंजरी	=)	=)
२०	मैना सुन्दरी नाटक ... ... सजिल्द १॥।)	१॥)	०

पुस्तक मिलने का पता,

बाबू न्यामतसिंह जैन,

सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड

हिसार (पंजाब)।